ORIGINAL ARTICLE ISSN:- 2231-5063

Golden Research Thoughts

नाथ पंथ और जायसी

जावेद अली

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

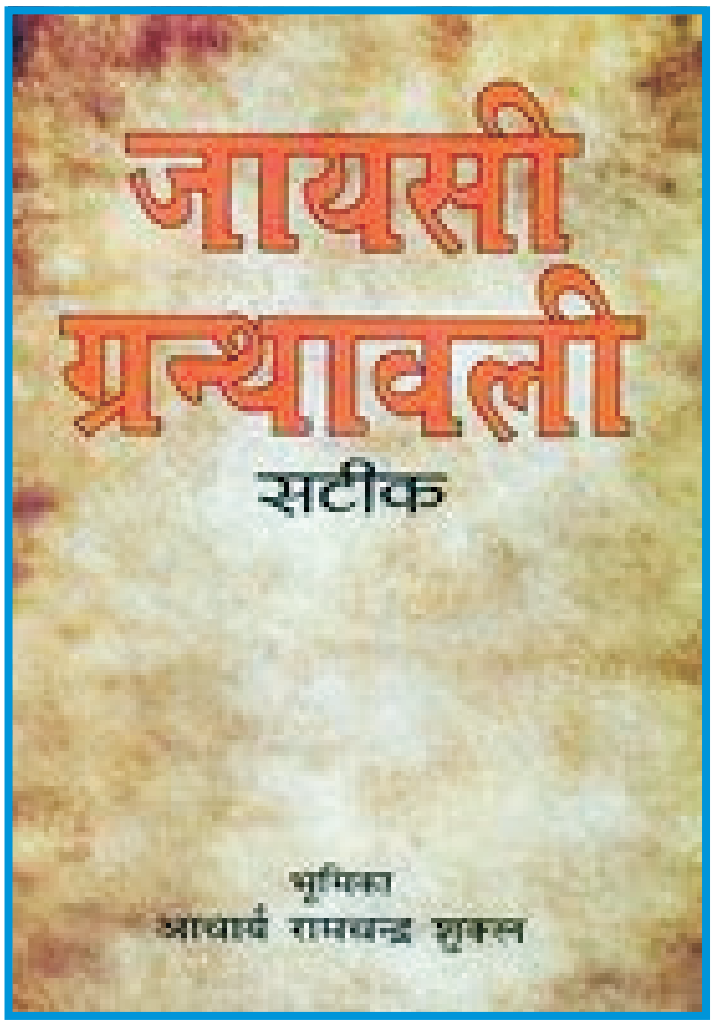

सारांश :-

गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित योग–सम्प्रदाय का भारतवर्ष में बड़ा व्यापक प्रभाव रहा है। भारत की सीमा से लगे नैपाल, ईरान, अफगानिस्तान, और तिब्बत आदि देश भी इस सम्प्रदाय से प्रभावित थे। गोरखनाथ का जन्म 10 वी शताब्दी में उत्तर–पश्चिमी पंजाब में हुआ। वे शंकराचार्य के समान ही भारतवर्ष के सर्वाधिक प्रभावशाली महापुरूषों में से एक थे। इस संदर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा कि–''शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और महिमांवित महापुरूष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भारतवर्ष के कोने–कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते है। भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन गोरखनाथ का योग–मार्ग ही था।''

जावेद अली

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

प्रस्तावना :-

नाथ–पंथी योगियों ने मुख्य रूप से तीन बातों पर जोर दिया– योग मार्ग, गुरू महिमा और पिंड ब्रह्मांडवाद। भक्ति आंदोलन के समय नाथ–पंथ के इस योग मार्ग का प्रभाव हिन्दुओं पर ही नहीं, अपितु मुसलमानों पर भी व्यापक रूप से पड़ा। बहुत से मुसलमानों ने नाथ–पंथ में दीक्षा ली और उनकी साधना–पद्धति को स्वीकार किया। इस सम्बन्ध में डॉ0 जयदेव लिखते है कि– ''उन्होंने आते ही पंजाब प्रांत में नाथों का प्रभाव देखा। उनके प्रति जनता के आकर्षण का विश्लेषण किया। उनकी कतिपय क्रियाओं से वे स्वयं भी प्रभावित हुए। अतएव उनकी अनेक बातों को प्रचार की दृष्टि से, आकर्षक होने के कारण अथवा अपने मत के अनुकूल होने के कारण सूफियों ने अपने मत में सम्मिलित कर लिया।''

गोरखनाथ के आंदोलन का प्रभाव भारत की सामान्य जनता पर तो पड़ा ही, साथ ही साथ भारतवर्ष की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य में भी नाथ–पंथ का प्रभाव प्रचूर रूप से देखने को मिला। जहां सभी भाषाओं में गोरखनाथ के लोकोत्तर व्यक्तित्त्व से सम्बन्धित किवदंतियाँ तथा लौकिक कथाएं देखने को मिल जाती है, तो वहीं हिन्दी साहित्य में गोरखनाथ का अमिट स्वरूप व्याप्त है। भक्तिकाल के चारों धाराओं के चारों प्रमुख कवियों पर उनके योग मार्ग का प्रभाव देखा जा सकता है। एक और हिन्दी के संत काव्य तथा सूफी कवियों के प्रेमाख्यानक काव्यों में योग–साधना की अतिव्याप्ति मिलती है तो दूसरी तरफ हिन्दी के राम–काव्य पर भी भगवान शिव के अभिन्न रूप गोरक्षपा और उनकी साधना पद्धति की झलक स्पष्टतः परिलक्षित होती है। तुलसी जी की उक्ति ''गौरख जगायो जोग'' से इस कथन की सहज पुष्टि हो जाती है। वहीं सूर ने निर्गुण के खण्डन तथा सगुण के मण्डन में जिस योग और योगी का बिम्ब खड़ा किया, वह गोरख पंथी ही है। आधुनिक काल में भी आकर यह प्रभाव कम नहीं हुआ, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की चंद्रावली नाटिका में जोगन का वेश–विन्यास और अधिकांश कथ्य नाथ–सम्प्रदाय के अनुरूप ही है। आधुनिक काव्य और उपन्यासों में गोरखनाथ जी के महात्मय तथा उनके योग का कितना प्रभाव पड़ा है, इसका विवेचन तो शोध–कार्य का स्वतंत्र विषय होने योग्य है।

नाथ–पंथ का प्रभाव भक्तिकाल में सर्वाधिक देखने को मिला। मलिक मुहम्मद जायसी भी इस पंथ से प्रभावित दिखाई देते हैं। उन्हें नाथ–पंथ के संस्थापक, गोरखनाथ किसके शिष्य है तथा उनकी कीर्ति कहां तक फैली हुई है इसकी पूर्ण जानकारी थी–

'' चली भगति सगरी सयँसारा।
कीरती गई समुंद्रहिं पारा।।
गोरख सिद्ध कीन्ह सुनि फेरा।
चेला नाथ मछंदर केरा।।''

अन्य सम्प्रदायों की भांति सूफी कवियों ने भी अपनी रचनाओं में गुरू को अत्यधिक महत्त्व दिया है। जायसी की गुरू–स्मरण से सम्बन्धित ''कहौं तरीकत अगुवा गुरू। रौसन दीन दुनी सुरखुरू।। पद इसका ज्वलंत प्रमाण है। जायसी गोरखनाथ जी के दिव्य स्वरूप से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने गोरखनाथ को 'गुरू' अर्थ में रूढ़ि सा मान लिया–

''बिना गुरू पंथ न पाइय, भूलै सो जो भेंट।
जोगी सिद्ध होई तब, जब गोरख सौं भेंट।।''

भारतीय कृष्ण गाथाओं में उद्धव कृष्ण का संदेश लेकर गोपियों के समक्ष प्रस्तुत होते हैं किंतु जायसी कृत 'कन्हावत' में यह कार्य गोरखनाथ द्वारा किया गया। यह जायसी के नाथ–पंथ से प्रभावित होने का ही उदाहरण है कि उन्होंने कृष्ण गाथाओं की प्राचीन परम्परा को तोड़ कृष्ण कथा का एक नया स्वरूप हमारे समक्ष प्रस्तुत किया तथा गोरखनाथ के द्वारा गोपियों को योग मार्ग की शिक्षा दिलवाई एवं गोरखनाथ के योग तथा कृष्ण के भोग की तकरार भी इसी रचना में बिंबित हुई–

''सुनि कै उठा कनु सो भोगी।
देखौं कइस सिद्ध वह जोगी।।
भगति सहँस दस को है भए।
भगति कहत गोरख पै गए।।''

हिन्दी के मुस्लिम कवियों ने जिनकी रचनाओं में सूफी–आध्यात्मिकता देखने की चेष्टा की जाती है, अपने प्रेमाख्यानकों में नायकों को प्रायः योगी वेश में ही प्रस्तुत किया है। उन्होंने योगी वेश का जो स्वरूप उपस्थित किया है, वह नाथ–पंथी योगियों का ही है। जायसी भारतीय सन्यासियों एवं यौगिक क्रियाओं से पूर्ण रूपेण परिचित थे। उन्होंने यह सब 'नाथ पंथियों' से ही सीखा था। एक योगी को साधना के लिये यौगिक परिवेश की आवश्यकता होती है। उसका परिवेश कैसा होना चाहिये, यह नाथ–पंथी योगियों की परम्परागत बात है। महाकवि जायसी उनकी परम्पराओं तथा

योग–साधनाओं से भलि–भांती अवगत थे। पद्मावत के 'योगी खंड' में जब नायक रत्नसेन नायिका पद्मावती (ब्रह्म) के अद्भुत सौंदर्य के बारे में सुनता हैं तो राजपाट छोड़ योगी–वेश धारण कर लेता हैं। उन्हें संसार के प्रति विराग का भाव उत्पन्न हो जाता है तथा वह भी नाथ–सम्प्रदाय के योगियों कि भांति रूप धारण कर पद्मावती रूपी ब्रह्म की प्राप्ति के लिए साधना में लीन हो जाते हैं। सींगी, सेली, मेखला, बाघम्बर, खप्पर, विभूति–रमाना, दण्ड लेना तथा गले में रूद्राक्ष की माला पहनना नाथ–पंथी योगियों के लिये आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी होता है। पद्मावत में रत्नसेन की योगी वेश–विन्यास भी इसी प्रकार का था–

''तजा राज, राजा भा जोगी।
ओ किगरी कर गहेउ वियोगी।।
तन बिसंभर मन बाउर लटा।
अरूझा प्रेम, परी सिर जटा।।
चन्द्र–बदन और चन्दन–देहा।
भसम चढ़ाई कीन्ह तन खेहा।।
मेखल सिंधी, चक्र धंधारी।
जोगबाट रूदराछ अधारी।।''

योगी के स्वभाविक एवं परम्परागत वर्णन के अतिरिक्त जायसी ने योगिनी रूप का वर्णन भी किया है–

''जोगिनि भेख वियोगिनि कीन्हा।
सींग सबद भूल तत लीन्हा।।
विरह भभूत जटा बैरागी।
छाला कांध, जाप कंठ लागी।।
मुद्रा स्रवन नाहिं थिर जीऊ।
तन तिरसूल अधारी पिऊ।।''

जायसी का योगी एवं योगिनी वर्णन प्रायः एक सा है। दोनों के बाह्य परिवेश में कोई विशेष अंतर नहीं। योगी के वेश–वर्णन में जायसी ने– जोग, बाट, रूद्राक्ष, अधारी कहा है, किन्तु योगिनी के वर्णन में उन्होंने 'तन तिरसूल', 'अधारी पीऊ' शब्दों का प्रयोग किया है। अतः जायसी के साधक की वेश–भूषा वैसी ही है जैसी नाथ–सम्प्रदाय के साधकों की होती है। कबीर एवं सूरदास के काव्यों में योगियों की वेश–भूषा का उल्लेख भी इसी रूप में हुआ है।

गोरख–पंथियों का मत हठयोग पर आधारित रहा है। हठयोग की परम्परा काफी प्राचीन रही है, एवं गोरखनाथ और उनके गुरू मछन्दरनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ) ने इसे व्यापक और व्यवहारिक रूप प्रदान किया था। यों तो हठयोग की साधना का तात्पर्य परमानन्द और ब्रह्मानुभूति प्राप्त करना है, पर लोक विश्वास है कि हठयोगी अपनी साधना के बल पर जो रूप चाहे धारण कर सकता है। उसकी शक्ति अजेय होती है। उसी लोक विश्वास को लेकर जायसी ने काल–विपर्यय की उपेक्षा कर गोरख–पंथी सिद्ध को कृष्ण काल में उपस्थित कर योग और भोग की महत्ता सामने रखने की चेष्टा की है–

''सुनहु न रावल उतर हमारा।
का करबेउं लइ जोग तुम्हारा।।
परगट विद्या परगट भेसू।
काज ना आवै यह उपदेसू।।
भोग भला जोगी कोइ जाने।
भोग करत बढ बिनु पहिचाने।।''

भगवान शिव को नाथ–सम्प्रदाय का आदि गुरू कहा गया है, और उनका निवास स्थान कैलाश पर्वत है। हठयोग साधना में जागृत कुण्डलिनी को सहस्रार चक्र तक पहुंचाना ही साधक का लक्ष्य होता है। यहाँ कैलाश उसी सहस्रार चक्र का सूचक है। जायसी ने पद्मावत में ब्रह्मस्वरूप पद्मावती के निवास स्थान के लिये 'कैलास' एवं 'कबिलास' शब्दों का प्रयोग किय है। वास्तव में साधक का चरम लक्ष्य नायिका रूपी साध्य (ब्रह्म) की प्राप्ति ही है–

''बाजन बाजे कोटि पचासा।
भा आनन्द सगरौ कैलासा।।
सात खण्ड ऊपर कबिलासू।
तहँवा नारि सेत मुख बासू।।''

ऊपर दिए गये तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सूफी कवि जायसी पर अपने समकालीन नाथ–सम्प्रदाय एवं उनके सिद्धांतों का काफी प्रभाव था, वह विशेष रूप से गोरखनाथ से प्रभावित थे। यही कारण था कि उनकी रचनाओं में नाथ–पंथ के आचार्यों तथा उनके सिद्धांतों का वर्णन विशिष्ट रूप से देखने को मिला।

संदर्भ सूची

1. पृष्ट सं. – 106, नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहबादए, 1950
2. पृष्ट सं. – 309, सूफी महाकवि जायसी, डॉ. जयदेव, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़, 1957
3. पृष्ट सं. – 237, कन्हावत, शिव सहाय पाठक, साहित्य भवन इलाहबाद, 1981
4. पृष्ट सं. – 06, कन्हावत, शिव सहाय पाठक, साहित्य भवन इलाहबाद, 1981
5. पृष्ट सं. – 297, पद्मावत, डॉ0 वासूदेवशरण अग्रवाल, साहित्य भवन झांसी, 1961
6. पृष्ट सं. – 240, कन्हावत, शिव सहाय पाठक, साहित्य भवन इलाहबाद, 1981
7. योगी खंड, पद्मावत, डॉ0 वासूदेवशरण अग्रवाल, साहित्य भवन झांसी, 1961
8. शाहदूती खंड, पद्मावत, डॉ0 वासूदेवशरण अग्रवाल, साहित्य भवन झांसी,1961
9. पृष्ट सं. – 241, कन्हावत, शिव सहाय पाठक, साहित्य भवन इलाहबाद, 1981
10. योगी खंड, पद्मावत, डॉ0 वासूदेवशरण अग्रवाल, साहित्य भवन झांसी, 1961